ISSN : 2583-2948

छज्जे पर ...

डॉ. आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.
Mobile: +971504270752
Email: arti.goel@hotmail.com

छज्जे पर सूखने रख आई हूँ
थोड़ी सी चिंताएँ
कुछ सूखी, कुछ सीली,
फरहरी हो जाएँगी
तो कूटी जा सकेंगी।

अलगनी पर टाँग दी मैंने
थोड़ी-सी कठिनाई
उन घड़ियों को देख-देख
आती है हिम्मत, मिलता है हल
सुलझती हैं समस्याएँ।

परछत्ती में छिपा दी हैं
गुदड़ी में भरकर
कुछ कडवी बोलियाँ
कानों में भरकर रुई
चिथड़ों में दबाकर
भुला डाली सब दु:खकर यादें।

हृदय के कोटर में सहेज ली हैं
मरहम की पट्टियाँ
गुनगुनाते कीट-पतंगे
सुहावनी सी खुशबू
और कुछ अनजाने
अपने वाले पल।

ISSN : 2583-2948

मेरे हिस्से के पाँव

माँ!
तूने तो पाला मुझे
रखा गर्भ में नौ माह
दिया जन्म पूरे शरीर को
और दी थी उड़ने की चाह,
फिर अब क्यों चल न पाती मैं
घुटरुनी भी सरक न पाती मैं
बढ़ने की कोशिश में कैसे
तन पर हैं ये मेरे घाव
माँ मेरी तू मुझे बता दे
कौन ले गया मेरे हिस्से के पाँव?

बाबा!
तुम लाए थे अपने आँगन
नन्ही काया का तुम सहारा
रुचिर शीत भी तेरे अंक
पक्की छत तले आसरा
धूप घनी में तुम बन बादल
शौक पले जो तुम थे संबल
छलनी हो गई कब चादर
झुलसे जाते जो मेरे चाव
अब बाबा तुम ही बतलाओ
कौन ले गया मेरे हिस्से की छाँव?

घर!
घर के बाहर नभ तक ही
एक नहीं हर घर था मेरा
एक क्षण को टिकते न पैर
पग में मेरे बँधा था फेरा
आमों की बगिया में कूकी
फूलों पर तितली संग झूमी
गली - पगडंडी दौड़ लगाई
अब चारों ओर जलते अलाव

anukarsh@alliance.edu.in

ISSN : 2583-2948

नहीं पत्र भर हरियाली मेरी
कौन ले गया मेरे हिस्से के गाँव?

देवी!
शारदे माँ! विद्या की देवी
ज्ञान अर्जन को तुमको पूजा
हाथ में कलम दवात भर स्याही
लिख-पढ़ना बस काम न दूजा
तख्ती से लेकर पुस्तक-ग्रंथ
तर्क-वितर्क जो मेरा पंथ
विवेक बुद्धिरत उद्गार सब
वाणी के अवरुद्ध उद्भाव
मूक मूढ़ सी चालें मैं देखूँ
कौन ले गया मेरे हिस्से के दाँव?

anukarsh@alliance.edu.in